राज्य की प्रकृति

मुग़लकालीन राज्य की प्रकृति के विषय में अनेक विभिन्नीकृत मत उपलब्ध हैं जिनमें से उल्लेखनीय का विश्लेषण आवश्यक है :

केंद्रीकृत राज्य

विलियम इरविन, आइ.एच. कुरेशी, इब्न हसन, पी. सरकार, सतीश चंद्र, नुरूल हसन, और अतहर अली जैसे विद्वानों ने अकबर के अधीनस्थ मुग़ल राज्य को केंद्रीकृत राज्य का एक उदाहरण माना है।[213] इस राज्य में लगभग सभी पदों पर मनसबदार नियुक्त थे जो एक व्यापक अफसरशाही या प्रशासनिक व्यवस्था का निर्माण करते थे। साम्राज्य को प्रशासनिक सुविधा के लिए प्रांतों (सूबों), ज़िलों, और उप-ज़िलों में बांटा गया था। हर स्तर पर सेना, राजस्व और न्याय से संबंधित कर्मचारी व अधिकारी नियुक्त थे जो अपनी-अपनी निश्चित क्षेत्रीय सीमाओं में कार्य करते थे। सभी के प्राधिकारों का विभाजन इस

प्रकार किया गया था कि केंद्र अर्थात राजधानी में नियुक्त मंत्री (वज़ीर) छोटे कस्बों में नियुक्त कनिष्ठ कर्मचारियों से जुड़ा हुआ व उनसे निरंतर संपर्क में था तथा हर कर्मचारी अपने वरिष्ठ अधिकारी के प्रति उत्तरदायी था। इन विद्वानों द्वारा दिए गए वर्णन से ऐसा प्रतीत होता है जैसे मुग़ल राज्य में शासन एक विशिष्ट तर्क प्रधान व सुव्यवस्थित सैनिक, प्रशासनिक, वैधानिक तथा न्यायिक ढांचे पर आधारित था।

पैतृक-अधिकारी तंत्र

यद्यपि सभी विद्वान मुग़ल राज्य को केंद्रीकृत मानने पर पूर्णतः सहमत नहीं है, तो भी मुग़ल राज्य में एक केंद्रीकृत प्रशासन के अस्तित्व पर प्रायः सभी में मतैक्य है। जहां पूर्ववर्णित विद्वानों ने मुग़ल राज्य को केंद्रीकृत राज्य का उदाहरण मानते हुए उसकी 'व्यापक प्रशासनिक व्यवस्था' पर विशेष बल दिया है, वहीं विटफोगल और आइसेनस्टाट ने भी यह मत व्यक्त किया है कि मुग़ल साम्राज्य का महत्वपूर्ण अभिलक्षण उसकी "शक्तिशाली केंद्रीकृत निरंकुश अफसरशाही में नीहित है"।[214] विटफोगल के अनुसार मुग़लकालीन प्राच्य निरंकुशवाद आधुनिक सर्वाधिकारवाद का पूर्वगामी था जिसमें अधिकारीतंत्र का प्राधान्य था।

इसी प्रकार आइसेनस्टाट के अनुसार अकबर ने एक अधिक केंद्रीकृत, एकीकृत राज्यतंत्र की स्थापना का प्रयास किया ताकि राजनीतिक निर्णयों और उद्देश्यों पर उसका एकाधिकार रहे। स्टीफन पी. ब्लेक, पीटर हार्डी व जे. रिचड्र्स का विचार है कि मुग़लों के शासन प्रक्रम को निरंकुश अधिकारीतंत्रीय राज्य के बजाय पैतृक-अधिकारीतंत्र (Patrimonial-Bureaucracy) पर आधारित साम्राज्य की कोटि में रखना अधिक उपयुक्त है।[215] ब्लेक ने पैतृक

अधिकारीतंत्रीय साम्राज्य की संकल्पना को मैक्स वेबर से ग्रहण किया है।[216] इस संकल्पना के अनुसार पैतृक अधिकारीतंत्र पर आधारित राज्य वह होता है जहां प्रशासन को शासक के घर परिवार या बंधु-बांधवों का ही विस्तार माना जाता हो तथा शासक के प्राधिकार को भी किसी भी पितृ सत्ता-प्रधान परिवार के पिता के अधिकारों का ही विस्तार समझा जाता हो। इस प्रकार के पैतृक राज्य की सेना शासक की घरेलू/पारिवारिक सेना से ही निर्मित होती है और उसका प्रशासन भी शासक के गृह-प्रशासन जैसा होता है।

ज़ब ऐसा राज्यतंत्र बहुत विशालकाय हो जाता है और शासक का परिवार पर्याप्त मात्रा में सेना व प्रशासन उपलब्ध कराने में असमर्थ रहता है तो फिर पितृकुल के बाहर के अधिकारियों, कर्मचारियों और सैनिकों को सेना व प्रशासन में प्रवेश मिल जाता है। प्रायः ये शासक के प्रधान अधीनस्थ अधिकारियों के सैनिक या कर्मचारी थे। ये नए अधिकारी-कर्मचारी आधुनिक अर्थों में अफसरशाह-नौकरशाह तो नहीं होते क्योंकि उन पदों को वे केवल अपनी तकनीकी योग्यता या अर्हता से प्राप्त नहीं करते बल्कि शासक की कृपा से प्राप्त करते हैं।[217] अतः शासक के परिवार व परिजनों का विशेष अध्ययन आवश्यक हो जाता है क्योंकि ब्लेक इन्हें ही नियंत्रण तंत्र और अधिकारियों को निष्ठावान बनाए रखने का साधन मानते हैं।

जान रिचड्र्स मुग़ल साम्राज्य को निरकुंशतावादी केंद्रीकृत बहु-प्रांतीय साम्राज्य के रूप में विश्लेषित करते हैं जो अपने संगठन व कार्यशैली में केंद्रीकृत भी था और विकेंद्रित भी, अधिकारीतंत्रीय भी था और पैतृक सत्तात्मक भी।[218] साथ ही वे मुग़ल साम्राज्य को एक 'सैनिक राज्य' या युद्ध-राज्य का स्वरूप भी देते हैं जिसकी गत्यात्मकता उसकी सेना में निहित थी, जिसके कुलीन वर्ग व शासक वर्ग योद्धा थे, और राज्य के कुल राजस्व का बड़ा भाग युद्ध अथवा युद्ध की तैयारियों पर खर्च होता था।[219]

ब्लेक का मत है कि आइने अकबरी का गहन विश्लेषण अकबरकालीन मुग़ल साम्राज्य में और वेबर द्वारा वर्णित पैतृक अधिकारीतंत्रीय साम्राज्य में उल्लेखनीय समानता स्थापित करता है।[220] उनके अनुसार आइने अकबरी में वर्णित दैवीय सहायता प्राप्त कुलपिता (Patriarch), शासन में कुटुंब का केंद्रीय स्थान, सैनिकों व सेना की सम्राट पर निर्भरता, शाही कुटुंब द्वारा नियंत्रित अव्यवस्थित व्यक्तियों के समूह का प्रशासन, तथा सम्राट के कार्यों में यात्रा का महत्व इत्यादि इस तथ्य का समर्थन करते हैं कि अकबर का राज्य एक पैतृक अधिकारतंत्रीय साम्राज्य था।[221] मुग़ल राज्यतंत्र की यह व्याख्या शाही परिवार और कुलीन वर्ग को संपूर्ण व्यवस्था का केंद्र बिंदु बना देती है अतः ब्लेक का यह भी सुझाव है कि मुग़ल राज्य की समुचित व सही समझ के लिए इतिहासकारों को शासक के परिवार व परिजनों का विशेष अध्ययन करना चाहिए क्योंकि वे न केवल प्रशासन अपितु साम्राज्य के आर्थिक संगठन के भी सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक थे।[222] मुग़ल प्रशासन का जो विवरण आइने-ए-अकबरी में मिलता है, वह ऐसा प्रशासन है जहां सत्ता का स्पष्ट विभेदीकरण नहीं है, विभिन्न प्रशासनिक विभाग और पद-सोपान भी नहीं हैं बल्कि वह शाही घराने के एक व्यक्ति समूह की ओर संकेत करता है जो बादशाह से सत्ता पा कर प्रांतीय और उप-प्रांतीय अधिकारियों पर निगाह रखते थे जो अपने-अपने स्तर पर विविध कार्यक्षेत्रों में सैनिक, वित्तीय और वैधानिक शक्तियों का प्रयोग करते थे।

विखंडित राज्य

भारतीय इतिहास के कुछ विश्लेषकों ने मुग़लकालीन राज्यतंत्र के स्वरूप का अध्ययन विखंडित राज्य (Segmentary State) की अवधारणा के संदर्भ में किया है। इनमें बर्टन स्टीन, डगलस ई स्त्रेसां और रिचर्ड फॉक्स उल्लेखनीय हैं।[223] ~~जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है,~~ विखंडित राज्य की अवधारणा

का प्रतिपाद एडन साऊथाल (Aidan Southall) ने 1956 में पूर्वी अफ्रीकी समाज 'अलूर' के अध्ययन के दौरान अपने ग्रंथ 'अलूर सोसायटी : ए स्टडी इन प्रोसेसिज़ एंड टाइप्स आफ डोमिनेशन,'[224] में किया था। भारत में बर्टन स्टीन ने मध्यकालीन दक्षिण भारतीय राज्य के विश्लेषण में उस अवधारणा को प्रयुक्त किया। स्टीन ने विखंडित राज्य के दो महत्वपूर्ण लक्षणों–पिरामिडी विखंडीकरण और औपचारिक (Ceremonial) तथा राजनीतिक प्रभुसत्ता के बीच विभाजन का वर्णन किया है। पिरामिड के आकार में विखंडित राज्य में राजनीतिक संगठन की सबसे छोटी इकाई गांव होता है जो एक तरफ तो कुछ मामलों में अपने से बड़ी इकाइयों गांव, क्षेत्र इत्यादि से आरोहण क्रम से जुड़ी होती हैं तो दूसरी तरफ कुछ अन्य मामलों में अनेक समान इकाइयों के विरोध में भी खड़ी प्रतीत होती है। द्वितीय, इस प्रकार के राज्य में औपचारिक प्रभुसत्ता पर केंद्र का एकाधिकार होता है परंतु वास्तविक राजनीतिक नियंत्रण नहीं होता। केंद्रीय शासक रस्मी तौर पर वास्तविक शासक होता है किंतु ज्यों-ज्यों केंद्र से भौगोलिक दूरी बढ़ती जाती है, शासक की शक्ति कम होती जाती है। दूरस्थित भू-क्षेत्रों में शासक के रस्मी तौर पर अधीन शासक तथा कर्मचारी अपनी शक्ति का उपयोग करते हैं। इस प्रकार विखंडित राज्य में जहां प्रभुसत्ता विधि के अनुसार केंद्र में ही होती है, वहीं वास्तविक राजनीतिक नियंत्रण अनेक केंद्रों अथवा शासकों में बंटा होता है।[225]

मुग़ल राज्यतंत्र के संदर्भ में विखंडित राज्य की संकल्पना के औचित्य का परीक्षण करने के पश्चात डगलस स्त्रेसां इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि मुग़ल साम्राज्य में विखंडित राज्य के ऊपर वर्णित दोनों लक्षण थे। केंद्र मुग़ल दरबार था जिसमें रस्मी अथवा औपचारिक प्रभुसत्ता नीहित थी। केंद्र पर बादशाह का पूर्ण नियंत्रण था, किंतु दूरस्थ भू-खंडों पर प्रशासनिक प्राधिकार बादशाह के अधीनस्थ व्यक्तियों के पास था। यह राजनीतिक व्यवस्था क्रमबद्ध थी जिसमें

सबसे नीचे गांव थे। उनके ऊपर जमींदारों के अनेक स्तर थे फिर शाही जागीरें थीं, परगने थे, सरकारें थीं और सूबे थे। वर्गीकरण के एक अन्य प्रकार के अनुसार दो प्रकार के भू-खंड अथवा क्षेत्र थे : स्थानीय और शाही क्षेत्र। स्थानीय जन-समुदाय से निर्मित कुछ भू-खंड स्थानीय अथवा देशी क्षेत्र माने जा सकते हैं जिनको केंद्र केवल मान्यता देता था। केंद्र द्वारा निर्मित भू-खंड शाही खंड होते थे। सूबों, सरकारों तथा मनसबदारों में सैनिक संगठन, निम्नस्तरीय अधिकारी-तंत्र तथा खंडीय पद-सोपान में स्थित अधीनस्थों की अन्य सभी विशेषताएं थीं परंतु इनमें आपसी संघर्ष की स्थिति कदाचित ही उत्पन्न होती थी और यदि होती भी तो केंद्रीय मुग़ल सरकार के पास सूबों में भी इतनी शक्ति थी कि वह वहां शाही तथा स्थानीय खंडों के आपसी संबंधों को नियंत्रित कर सकती थी। अतः मुग़ल राज्यतंत्र को विखंडित राज्य का पूर्ण उदाहरण मानना कठिन है।[226] स्त्रेसां के अनुसार अकबर के शासन काल के पूर्वार्ध में प्रशासनिक संस्थाओं व व्यवहार का नया समूह, राज्यत्व और शासन व समाज की नई अवधारणा, नवीन सैन्य व्यवस्था और राजनीतिक व्यवहार के नए मानदंडों का विकास हुआ। अतः मुग़ल साम्राज्य के निर्माण के लिए उत्तरदायी राजनीतिक परिवर्तनों को समझने के लिए आवश्यक है कि इस परिवर्तन के चार अनिवार्य तत्वों का अध्ययन किया जाए। ये तत्व हैं: शक्ति का बढ़ता हुआ केंद्रीकरण, अकबर की साम्राज्यिक संप्रभु के रूप में स्वीकृति और मुग़ल संविधान की अधिकाधिक स्वीकार्यता, साम्राज्य के शासक समूह में परिवर्तन और मनसबदारी व्यवस्था तथा मनसबदारों के वर्ग का विकास।

अलेक्ज़ेंडर डो के अनुसार भारत में मुस्लिम राज्य के इतिहास को दो भागों में बांटा जा सकता है। प्रथम को उन्होंने अफगान साम्राज्य (गज़नी से मुग़लों तक) कहा है और द्वितीय को मुग़ल साम्राज्य।[227] साम्राज्य शब्द का प्रयोग उन्होंने राज्य की एक उच्चतर राजनीतिक स्थिति दर्शाने के लिए किया है। मुग़ल

साम्राज्य को उन्होंने अफगान साम्राज्य से बेहतर माना है केवल इसलिए नहीं कि उसकी भू-सीमाएं अधिक व्यापक या विस्तृत थीं अपितु मुख्यतः इसलिए कि उसका चरित्र भिन्न था– उसके शासकों का दृष्टिकोण उदार था और उसके अधिकार-तंत्र का आधार व्यापक था– तथा इन दोनों का परिणाम साधारण जनता की प्रसन्नता और संपन्नता था। परंतु डो का यह भी स्पष्ट विचार था कि दोनों मुस्लिम राज्यों की संरचना अथवा संविधान पूर्णतः निरंकुश था जो शासन का प्रशंसनीय स्वरूप नहीं माना जा सकता तथा प्रजा के कोई अधिकार नहीं थे, यहां तक कि उनकी कृषि भूमि पर भी उन्हें संपत्ति का अधिकार नहीं था। जबकि इब्न हसन के अनुसार झरोखा दर्शन और उस समय सामान्य जन की फरियाद सुनने की मुग़ल प्रथा तथा दीवाने-ए-आम के मुग़लकालीन वृत्तांत व इतिहास लेखन से यह बात स्पष्ट उभर कर आती है कि साधारण जन बादशाह तक पहुंच सकते थे। परंतु औरंगज़ेब ने इस प्रथा को समाप्त कर दिया और वहीं से मुग़ल राज्य का पतन भी प्रारंभ हो गया।[228]

मलिक का विचार है कि मुग़ल राज्य अपने संगठनात्मक स्वरूप में पूर्णतः केंद्रीकृत था और उसमें सर्वप्रभुता संपन्न एकात्मक राज्य के सभी लक्षण विद्यमान थे। उनके अनुसार मुग़ल राज्य ने अपनी प्रभुसत्ता का उपयोग बड़ी स्पष्टता से अपने सभी अधीनस्थ क्षेत्रों पर पूर्ण प्रशासनिक नियंत्रण रखते हुए किया। मुग़ल काल में शाही केंद्र असीमित शक्ति का स्रोत था तथा हर सूबे के प्रशासनिक तंत्र की सभी शाखाओं को प्राधिकारों व शक्ति की प्राप्ति केंद्र से ही होती थी।[229] यद्यपि मुग़ल शासन एक विस्तृत व व्यापक अधिकार तंत्र पर आधारित था जिसमें विभागों व अधिकारियों में श्रेणीबद्ध विभाजन था फिर भी शासक सर्वशक्तिशाली था। नागरिक सेवा से संबंधित पद हो अथवा सैनिक पद कोई भी पद आनुवंशिक नहीं था। शासक अपनी इच्छानुसार अधिकारियों की नियुक्ति करता था, उन्हें स्थानांतरित करता था और उन्हें पद से हटा भी सकता था। अधिकारी अपने से वरिष्ठ अधिकारियों तथा अंततः बादशाह के

प्रति उत्तरदायी होते थे। इन तथ्यों के आधार पर मुग़ल राज्य को विशेषतः अकबरकालीन राज्य को एकात्मक अधिकारीतंत्रीय प्रशासन पर आधारित राज्य भी कहा जा सकता है। शासक वर्ग के आधार को व्यापक बना कर तथा जन-सहमति के लिए मिली-जुली संस्कृति को लक्ष्य बना कर अकबर ने इस प्रशासनिक ढांचे को स्थिरता, व प्रशासनिक कुशलता प्रदान करने का प्रयास किया और उल्लेखनीय सफलता भी प्राप्त की।

कुछ इतिहासकार 'गोलाबारूद साम्राज्य' (Gunpowder Empire) की परिकल्पना को मुग़ल राज्य पर लागू करते हुए उसे 'सैनिक राज्य' के रूप में वर्णित करते हैं। गोलाबारूद साम्राज्य की परिकल्पना रूसी प्राच्यविद वी.वी. बार्टोल्ड (V.V. Bartold) ने विकसित की जिसके आधार पर उन्होंने यह मत दिया कि मुग़ल, आटोमन और सफावी साम्राज्य अपने पूर्ववर्ती साम्राज्यों से आकार, केंद्रीकरण और कालावधि में इसलिए बड़े थे क्योंकि इनके समय में आग्नेयास्त्रों का विकास हुआ था।[230] बाद में मार्शल होजसन (Marshall G.S. Hodgson), विलियम मैक्नील (William H. McNeill) तथा कुलके और रोथरमंड ने इसी परिकल्पना को आधार बनाते हुए मुग़ल साम्राज्य को गोलाबारूद साम्राज्यों की श्रेणी में रखा।[231] होजसन और मैक्नील के अनुसार गोलाबारूद के प्रयोग विशेषतः अवरोधक तोपखाने की बदौलत मुग़ल साम्राज्य अस्तित्व में आया और केंद्रीय शक्ति में वृद्धि हुई क्योंकि अवरोधक तोपखाने के बल पर गढ़ों और किलों पर कब्ज़ा किया जा सका था। चूंकि केंद्रीय सरकार भारी मात्रा में, अवरोधक तोपखानों का रख-रखाव करने में समर्थ थी, इसलिए सूबों की तुलना में उसकी सैनिक श्रेष्ठता के विषय में कोई संदेह ही नहीं रह जाता था। इसी के बल पर मुग़ल एक व्यापक और अधिक केंद्रीकृत साम्राज्य

पर शासन कर सके। इस प्रकार गोलाबारूद साम्राज्य की संकल्पना के आधार पर यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि आग्नेयास्त्रों के प्रयोग ने न केवल मुग़लों को इतने बड़े साम्राज्य को जीतने में मदद दी, बल्कि तात्विक रूप से केंद्र और सूबों के परिधि के साथ संबंधों को ही बदल दिया।

परंतु क्रिस्टोफर डफी और इरफान हबीब का मत है कि मुग़लों की युद्ध कला अथवा सैन्य शक्ति में तोपखाना ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग नहीं था।[232] व्यूह-रचना युक्त तोपखाने, आग्नेयास्त्रों, सज्जित पैदल सेना तथा घुड़सवार तीरंदाज सेना-तीनों ही केवल मुग़लों के पास थे इसलिए उनकी सैनिक श्रेष्ठता व वर्चस्व बना रहा। मुग़लकालीन केंद्रीय सरकार की संयुक्त सेना ने जब चाहा, तब जागीरदारों और सूबाई अधिकारियों को हटाने में सफलता प्राप्त की।

डगलस स्त्रेसां मुग़ल साम्राज्य के संदर्भ में प्राच्य निरंकुशवाद, अधिकारीतंत्रीय साम्राज्य और गोलाबारूद साम्राज्य की अवधारणाओं को केवल सीमित प्रासंगिकता-युक्त मानते हैं।[233] विटफोगल का प्राच्य निरंकुशतावाद मुग़ल राज्य पर पूर्णतः लागू नहीं होता क्योंकि अकबर की केंद्रीकरण, की नीति से जब शासक वर्ग को खतरा हुआ, और उन्होंने उसका विरोध किया तो अकबर को अपनी नीति कुछ सीमित करनी पड़ी। इसी प्रकार आइसेनस्टाट द्वारा मुग़ल साम्राज्य का अधिकारीतंत्रीय समाज के रूप में वर्णन, प्रांतीय शासन के यथार्थ को नकारता है जहां साम्राज्य के अधिकारीतंत्र का दिन प्रतिदिन के जीवन पर नहीं के बराबर असर था। स्टीफन ब्लेक का पैतृक अधिकारीतंत्रीय माडल यद्यपि मुग़ल राज्य के लिए अधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है परंतु इसमें भी मनसबदारों और सम्राट/बादशाह के संबंधों का समुचित वर्णन नहीं मिलता, वे शून्य में वर्णित प्रतीत होते है। बर्टन स्टीन की विखंडित राज्य की अवधारणा भी मुग़ल राज्य पर काफी सीमा तक लागू होती है जिसमें एक केंद्र व अन्य अनेक राजनीतिक खंडों-जागीर, परगना, सरकार, प्रांत, ग्राम इत्यादि का अस्तित्व था, परंतु साम्राज्यिक खंडों का अस्तित्व और जागीरों की हस्तांतरणीयता मुग़ल

राज्य को स्टीन की विखंडित राज्य की अवधारणा से भिन्न बना देती है। अतः स्त्रेसां के अनुसार, मुग़ल साम्राज्य एक मिश्रण था जो व्यापक भाव में केंद्रीय स्तर पर इस्लामी था और प्रांतीय स्तर पर भारतीय। एक ओटोमन सुल्तान केंद्रीय अफसरशाही को जानी-पहचानी पाता तो एक चोल राजा प्रांतीय स्वायत्तता अर्थात प्रांतीय स्तर पर साम्राज्यिक केंद्र की सीमित भूमिका को सरलता से समझ पाता। मुग़ल शासन के दौरान चलनशील खंडों की संरचना के द्वारा समर्थित एक साम्राज्यिक केंद्र खंडों में जोड़-तोड़ कर फेर-बदल तो कर सकता था परंतु उनका विलय या संयोजन नहीं कर सकता था। प्रांतों की अस्थिरता मुग़लों के लिए खतरा नहीं थी। यह साम्राज्य के गत्यात्मक अस्तित्व का ही भाग थी।[234]

कुछ इतिहासकारों का मानना है कि गैर कट्टरपंथी राज्य-नीतियों का प्रवर्तन व संवर्धन करके अकबर ने 'राष्ट्रीय राजत्व' की परंपरा प्रारंभ की। इस मत के अनुसार राजपूतों तथा अन्य हिंदुओं, भारतीय मुसलमानों, अफगानों, ईरानियों और मध्य एशिया मूल के मुसलमानों को शासक वर्ग में सम्मिलित कर अकबर ने उन्हें मुग़ल साम्राज्य में भागीदार बनाया और इस प्रकार सांप्रदायिक राज्य के विपरीत एक 'राष्ट्रीय राज्य' का निर्माण किया।[235] परंतु डगलस स्त्रैसां का विचार है कि 'मुग़ल साम्राज्य के लिए 'राष्ट्रीय' विश्लेषण का प्रयोग करना काल दोष ही माना जाएगा क्योंकि इसमें न तो जनसमुदाय की सामूहिक भागीदारी थी और न ही जनता का किसी भूगौलिक या नृजातीय आदर्श से लगाव था। यह तो केवल एक राजवंश का ही आदर्श था।'[236] वस्तुतः अकबर की राजनीतिक उपलब्धि उच्च वर्ग में व्याप्त कुल परंपरागत और गुटबंदी से जुड़े हितों के बीच सामान्य संतुलन लाने से कहीं अधिक कठिन थी। उसने और उसके सलाहकारों ने एक नई व्यक्तिगत और सामूहिक पहचान बनाने में सफलता प्राप्त की थी। वह पहचान थी शाही मनसबदारों या अमीरों के वर्ग की, अर्थात सेनानायकों व

प्रशासकों की। इस वर्ग को उनका स्तर और अभिप्रेरणा साम्राज्य में उनकी भागीदारी से ही प्राप्त होती थी, न कि उनके वंशक्रम से, न उनके सामुदायिक जुड़ावों से और न ही उनकी व्यक्तिगत उपलब्धियों से'।

यूं अबुल फज़ल ने राज्य की जो संकल्पना प्रतिपादित की तथा अकबर ने राज्य का जो स्वरूप स्थापित किया वह सार्वदेशिक था। उसकी नीतियां सुलह-ए-कुल (सभी के साथ शांति का व्यवहार) के सिद्धांत पर आधारित थी जिसमें सभी जाति, धर्म, संप्रदायों और राष्ट्रीयता के लोगों के लिए स्थान था। उसकी सरकार का आधार केवल शरियत न होकर 'जवाबित' (राज्य का कानून) भी था फिर भी स्वयं अकबर ने अपने आप को इस्लाम का हिमायती बताया था और सन् 1579 ई. के महज़र ने अकबर को इमाम', अमीरूलमुमीनीन तथा मुज़्नहिद अर्थात मुख्य विधि-अधिकारी तो बनाया ही था, कुरान को राज्य के आधारभूत कानून के रूप में मान्यता भी दे दी थी। इस आधार पर यह सरलता से समझा जा सकता है कि मुग़ल राज्य का परिचालन इस्लाम के व्यापक ढांचे में ही हो रहा था। यद्यपि अकबरकालीन मुग़ल राज्य में पर्याप्त धार्मिक स्वतंत्रता के लिए स्थान था, परंतु यह स्थिति सभी मुग़ल शासकों के शासन काल व नीतियों के विषय में सत्य नहीं कही जा सकती।

अंततः मुग़ल राज्य की प्रकृति 'सीमित धर्माधीन निरंकुशतंत्र' की कही जा सकती है जिसमें प्रायः शासक इस्लाम के एजेंट के रूप में कार्य करने का दावा करते थे और इस रूप में उनके क्या कर्तव्य थे, इसका निर्णय भी वही करते थे। परंतु इसमें शासकों और नागरिकों के लिए चयन के काफी विकल्प थे। यह सीमित निरंकुशतंत्र भी था जिसमें जन-विद्रोह को छोड़ कर शासकों की शक्ति को सीमित रखने के कोई साधन अथवा संस्थाएं नहीं थीं। उत्तराधिकार व सत्ता-हस्तांतरण के कोई मान्य और सुनिश्चित नियम नहीं थे। अतः प्रत्येक मुग़ल बादशाह की मृत्यु के समय और तदुपरांत नए बादशाह की नियुक्ति को लेकर राजनीतिक गतिविधियां अत्यधिक तेज़ हो जाती थीं। चाहे वह बाबर की मृत्यु हो, जहांगीर की अथवा शाहजहां की और प्रायः बादशाहत सर्वाधिक शक्तिशाली और कूटनीतिज्ञ को हासिल होती थी।

उनकी निरंकुशता पर जन-विद्रोहों के अतिरिक्त धर्म का भी अंकुश था क्योंकि नागरिकों का जीवन धार्मिक विधियों द्वारा ही विनियमित व संचालित था। केवल कुछ विवाह व संपत्ति पर अधिकार के मामलों को छोड़ कर अधिकांश

विधियां हिंदू व मुस्लिम धार्मिक विधियां थीं जिन पर शासकों का कोई विशेष नियंत्रण नहीं था। शायद यही कारण था कि यूरोपीय यात्रियों ने यह अनुभव किया कि मुग़ल शासन में कोई लिखित विधियां नहीं थीं। वस्तुतः ऐसा नहीं था कि कोई लिखित विधियां नहीं थीं। विधि तो लिखित थी परंतु उन्हें बनाने में मुग़ल राज्य अथवा शासकों की कोई भूमिका नहीं थी। विविध शासकों चाहे वह अकबर हो अथवा औरंगज़ेब ने उनमें कुछ परिवर्तन अवश्य किए। ये परिवर्तन कहीं सुधारवादी थे तो कहीं संकलनवादी थे। परंतु पूरी तरह से मुस्लिम विधि की मान्यता पर आधारित थे। सब मुग़ल शासकों के काल में सद्र-उस-सदूर नामक अधिकारी मुख्य धर्माधिकारी के रूप में नियुक्त था जिसे धर्म की व्याख्या करने और उस पर निर्णय देने का अधिकार था जो उसे धर्मतंत्र के काफी नज़दीक ला खड़ा करता है परंतु उसकी नियुक्ति तथा पदमुक्ति बादशाह के अधिकार क्षेत्र में थी जो उसे बादशाह के अधीनस्थ भी बना देती थी।

—x—